सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया

सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया –

सूक्ष्म शिक्षण तकनीकी के द्वारा छात्र अध्यापको को एक विशेष कौशल का शिक्षण दिया जाता है। छात्र अध्यापको को किसी कौशल विशेष में पारंगत करने के लिए सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया निम्नलिखित तीन अवस्थाओं में सम्पन्न होती है।

1) ज्ञानार्जन अवस्था या अभिविन्यास अवस्था :-

ज्ञानार्जन अवस्था को सूक्ष्म शिक्षण की पूर्व अवस्था को भी कहा जाता है इस अवस्था को छात्र अध्यापक के अन्तर्गत आने वाले सोपान इस प्रकार है।

(A) सोपान I :-

सूक्ष्म शिक्षण के सैद्धान्तिक ज्ञान देना –

सबसे पहले छात्राध्यापिका सूक्ष्म शिक्षण के बारे में सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। इससे छात्राध्यापक को सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ महत्व उपयोग प्रक्रिया तथा सूक्ष्म शिक्षण तकनीक के लिए आवश्यक परिस्थितियो के सम्बन्ध में जानकारी दी जाती है।

(B) सोपान II :-

शिक्षण कौशलो की चर्चा :-

इस सोपान के अन्तर्गत

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

छात्राध्यापिकाओ को विभिन्न कौशलो से परिचित कराया जाता है। इसके लिए कौशलो का महत्व व उपयोग विशिष्ट शिक्षण कौशलो घटको एव अध्यापको के व्यवहार सम्बन्धी घटको की चर्चा की जाती है।

(c) **सोपान III :-**

विशिष्ट शिक्षण कौशलो का चयन :-

इस सूक्ष्म शिक्षण में एक समय में एक ही शिक्षण कौशल का अभ्यास किया जाता है इसलिए इस सोपान के अन्तर्गत छात्राध्यापिकाओ को अभ्यास हेतु एक ही कौशल का चुनाव करने के लिए कहा जाता है। इस शिक्षण कौशल के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एव प्रशिक्षण परिषद (NCRT) का योगदान महत्वपूर्ण है।

(D) **सोपान IV :-**

आदर्श पाठ का प्रस्तुतीकरण :-

इस सोपान के अन्तर्गत छात्राध्यापिकाओ के सामने चुने हुई शिक्षण कौशल का अभ्यास कराने के लिए एक आदर्श पाठ प्रस्तुत किया जाता है। आदर्श पाठ को प्रस्तुत करने का उद्देश्य छात्राध्यापिकाओ को शिक्षण कौशल के सम्बन्धित आवश्यक क्रियाओ और अध्यापक व्यवहार का अच्छी प्रकार से करना सीखाना है आदर्श पाठ को प्रस्तुत करने के लिए उसकी विस्तृत लिखित योजना छात्राध्यापिकाओ को दी जा सकती है। या उसे टेपरिकार्डर पर टेप

SVT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

करके छात्राध्यापिकाओ को सुनाया जा सकता है। आदर्श पाठ को अध्यापक द्वारा वास्तविक रूप में पढ़ाकर दिखाया जा सकता है अथवा उसकी वीडियो फिल्म बनाकर छात्राध्यापिकाओ को दिखाई जा सकती है।

(E) **सोपान V :—**

आदर्श पाठ का निरीक्षण व समालोचन :—

कक्षा में जब आदर्श पाठ प्रस्तुत किया जाता है तो छात्र उसको देखकर सुनकर अथवा पढ़कर सावधानी पूर्वक उसका निरीक्षण करते है व समालोचन करते है आदर्श प्रस्तुत करने से पहले ही छात्रो को यह बता दिया जाता है। कि उन्हे कौन - कौन सी क्रियाएँ नोट करनी है। क्रियाओ को नोट करने के लिए निरीक्षण अनुसूची दी जाती है इस प्रकार उन्हे यह भी समझा दिया जाता है कि इन अनुसूचियो का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है। इस कार्य द्वारा छात्राध्यापिकाओ को निरीक्षण कौशल में पारंगत होने में सहायता मिलती है।

(II) कौशल अर्जन अवस्था —

कौशल अर्जन अवस्था को सूक्ष्म शिक्षण की अन्त: क्रियात्मक अवस्था भी कहा जाता है इस अवस्था में छात्राध्यापिका किसी एक शिक्षण कौशल से सम्बन्धित सूक्ष्म पाठयोजना तैयार करती है। प्रतिपुष्टि प्रदान करता है वह इन क्रियाओ के माध्यम से कौशल में दक्षता प्राप्त करने का प्रयास करता है। इस अवस्था के अन्तर्गत आने वाले सोपान निम्नलिखित है —

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

सोपान VI —

सूक्ष्म पाठयोजना तैयार करना —

इस सोपान के अन्तर्गत छात्राध्यापिका शिक्षण का अभ्यास करने के लिए एक उचित उपविषय का चुनाव करती है। और एक आदर्श पाठयोजना तैयार करता है। आदर्श पाठयोजना तैयार करने के लिए वह अपने प्राध्यापक की सहायता लेता है और वह उपलब्ध सामाग्री या पुस्तको का अध्ययन करता है।

सोपान VII —

सूक्ष्म शिक्षण सम्बन्धी उचित परिस्थितियो का निर्माण —

इस सोपान के अन्तर्गत शिक्षण कौशल का अभ्यास करने के लिए उचित परिस्थितियो का निर्माण किया जाता है। इसमें कक्षा का सूक्ष्म आकार पाठ की सूक्ष्म अवधि निरीक्षक छात्र सम्मिलित होते है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) में भारतीय परिवेश के सन्दर्भ में सूक्ष्म शिक्षण का निम्न प्रारूप बताया है —

I) छात्रो की संख्या 5 – 10
II) छात्र – वास्तविक या सहपाठी छात्राध्यापिका
III) निरीक्षण कर्त्ता — महाविद्यालय निरीक्षक और सहपाठी छात्राध्यापिका

सूक्ष्म पाठ की अवधि – 6 मिनट
सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि – 36 मिनट

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

सूक्ष्म शिक्षण की समय अवधि का विभाजन इस प्रकार से है—

शिक्षण	(Teaching)	6 मिनट
प्रतिपुष्टि	(Feed Back)	6 मिनट
पुनः योजना	(Re – planing)	12 मिनट
पुनः शिक्षण	(Re – Teaching)	6 मिनट
पुनः प्रतिपुष्टि	(Re – Feed Back)	6 मिनट
सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि		36 मिनट

सोपान VIII —

शिक्षण करना — इस सोपान के अन्तर्गत छात्राध्यापिका 5–10 छात्रों को कक्षा में अपने द्वारा तैयार किये गये पाठ को 6 मिनट पढ़ाती है। उसके द्वारा पढ़ाये गए पाठ को निरीक्षण (निरीक्षण महाविद्यालय निरीक्षक और सहपाठी छात्राध्यापिका निर्धारित निरीक्षण अनुसूची की सहायता से करते हैं।

सोपान IX :—

प्रतिपुष्टि प्रदान करना — पाठ पढ़ाने के बाद छात्राध्यापिका को अपने पढ़ाए हुए पाठ के विषय में तुरन्त प्रतिपुष्टि प्रदान की जाती है प्रतिपुष्टि के लिए 6 मिनट का समय दिया जाता है प्रतिपुष्टि के द्वारा छात्राध्यापिका को शिक्षण कौशल सम्बन्धी कमियों का ज्ञान होता है। और उसके व्यवहार

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

में वांछित परिवर्तन होता है। भारतीय परिवेश में महाविद्यालय निरीक्षक और सहपाठी छात्राध्यापिका को प्रतिपुष्टि प्रदान करते है। विकासित देशो में प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए वीडियो फिल्म टेपरिकार्डर, क्लोस सर्किट टेलीविजन (CCTV) का प्रयोग किया जाता है।

सोपान X :-

पुनः पाठयोजना बनाना —

महाविद्यालय निरीक्षक और सहपाठी छात्राध्यापिका द्वारा प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर छात्राध्यापिका पूर्व निर्मित पाठयोजना में संशोधन करता है। अथवा अपने सूक्ष्म शिक्षण पाठ की पूर्व योजना बनाती है। छात्राध्यापिका सूक्ष्म शिक्षण पाठ की पुनः योजना इसलिए बनाती है। कि शिक्षण कौशल में दक्षता प्राप्त की जा सके। इस कार्य के लिए 12 मिनट का समय निश्चित है।

सोपान XI :-

पुनः शिक्षण करना —

पुनः पाठयोजना बनाने के बाद छात्राध्यापिका सूक्ष्म शिक्षण पाठ को पुनः कक्षा में पढ़ाता है। इस कार्य के लिए 6 मिनट का समय निर्धारित है।

सोपान XII —

पुनः प्रतिपुष्टि प्रदान करना —

छात्राध्यापिका द्वारा पुनः

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

पढ़ाए गए पाठ का महाविद्यालय निरीक्षक और सहपाठी छात्राध्यापिका पुनः निरीक्षण व मूल्यांकन करते हैं। इस कार्य के लिए 6 मिनट का समय दिया जाता है

— इस अवस्था के विभिन्न सोपानों का सूक्ष्म शिक्षण चक्र के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।

सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Micro Teaching Cycle) :—

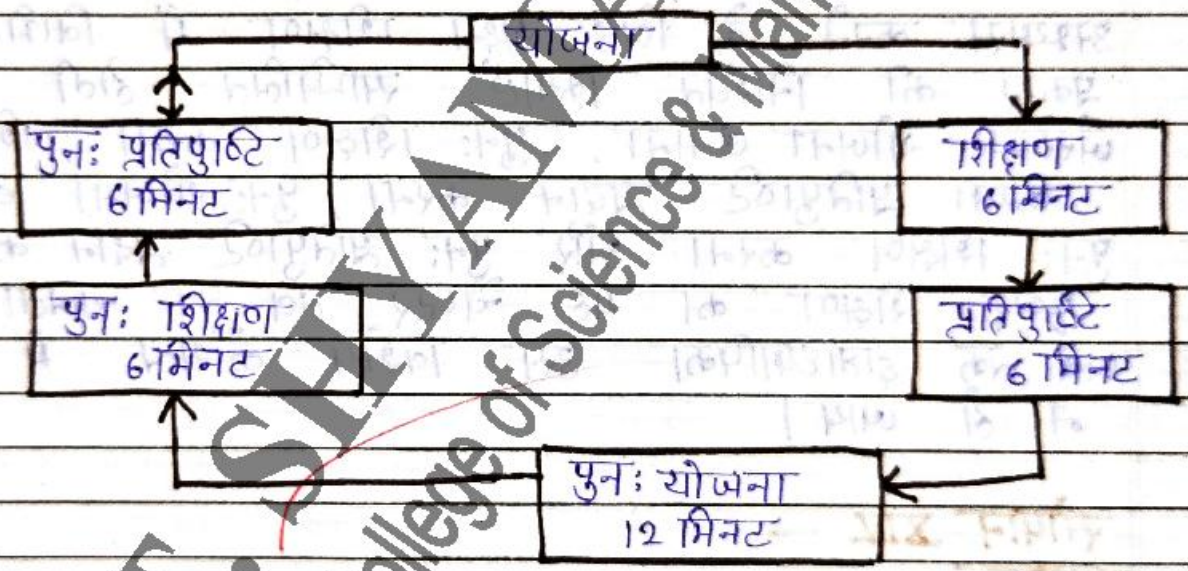

कौशल स्थानान्तरण अवस्था :—

कौशल स्थानान्तरण अवस्था को सूक्ष्म शिक्षण के बाद की अवस्था को Post Active Face of Micro Teaching कहा जाता है।

यह सीखे गये कौशलों को वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग करने की अवस्था है इस अवस्था में छात्राध्यापिका विविध कौशलों को वास्तविक कक्षा शिक्षण में

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

प्रयोग करती है। जहाँ छात्रों की पूरी संख्या तैयार होती है। इस अवस्था का मुख्य उद्देश्य शिक्षण कौशलों को इकट्ठा करना व उनका प्रयोग करना है इस अवस्था के अन्तर्गत आने वाले सोपान इस प्रकार है —

सोपान XIII —

सूक्ष्म शिक्षण चक्र की पुनरावृत्ति —

शिक्षण कौशल का अभ्यास करने के लिए सूक्ष्म शिक्षण में विभिन्न प्रकार की निश्चित क्रियाएं सम्मिलित होती हैं। जैसे — योजना बनाना, पुनः शिक्षण करना, शिक्षण करना प्रतिपुष्टि प्रदान करना, पुनः योजना बनाना और पुनः शिक्षण करना और पुनः प्रतिपुष्टि प्रदान करना सूक्ष्म शिक्षण का यह चैप्टर तब तक चलता रहता है जब तक छात्राध्यापिका उस विशेष कौशल में पारंगत न हो जाए।

सोपान XIV —

शिक्षण कौशलों का एकीकरण —

इस सोपान के अन्तर्गत उन सभी शिक्षण कौशलों को एकीकृत किया जाता है। जिसमें छात्राध्यापिका सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास द्वारा अलग - अलग रूपों में अर्जित करती है शिक्षण कौशलों का प्रयोग एकीकृत ही करने के लिए किया जाता है। वास्तविक शिक्षण कौशलों का प्रयोग अलग अलग नहीं किया जाता है।

— इस प्रकार सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया में उपरोक्त सभी

SMT. SIYA DEVI Degree College of Science & Management